रजः=रजोगुण को; **रागात्मकम्**=काम से उत्पन्न; **विद्धि**=जान; **तृष्णा**=अप्राप्त विषय की अभिलाषा; **संग**=प्राप्त विषय में आसक्ति से; **समुद्भवम्**=उत्पन्न; **तत्**=वह; **निबध्नाति**=बाँधता है; **कौन्तेय**=हे अर्जुन; **कर्मसंगेन**=सकामकर्म की आसक्ति से; **देहिनम्**=बद्धजीव को।

अनुवाद

और हे अर्जुन! कामजनित रजोगुण को तृष्णा और आसक्ति से उत्पन्न जान। यह जीवात्मा को सकामकर्म की आसक्ति से बाँधता है।।७।।

तात्पर्य

रजोगुण का स्वरूप स्त्री और पुरुष में एक दूसरे के प्रति होने वाला आकर्षण है। स्त्री पुरुष में राग रखती और पुरुष का स्त्री में राग है—यही रजोगण है। इस रजोगुण की वृद्धि होने पर विषयतृष्णा जागृत होती है, जिससे रजोगुणी इन्द्रियतृप्ति के लिए उन्मत्त हो उठता है। इन्द्रियों की तृप्ति के लिए वह समाज अथवा राष्ट्र में सम्मान तथा सुख, परिवार, पुत्र, कलत्र, गृह आदि विषयों की स्पृहा करता है। ये सब रजोगुण के कार्य हैं। जब तक इन पदार्थों की तृष्णा बनी रहती है, तब तक कठोर परिश्रम करना पड़ता है। इसीलिए यहाँ स्पष्ट कहा है कि वह अपने कर्मों के फल में आसक्ति के कारण बँध जाता है। स्त्री, पुत्र और समाज की प्रसन्नता के लिए और अपनी प्रतिष्ठा अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए कर्म करना आवश्यक है। अतः प्रायः सारा विश्व ही रजोगुण के वशीभूत हो रहा है। आधुनिक सभ्यता ने वस्तुतः केवल रजोगुण में उन्नति की है। इसके विपरीत, पूर्व में सात्त्विक अवस्था उन्नत समझी जाती थी। जब सत्त्वगुणी मनुष्य की भी मुक्ति नहीं हो सकती, फिर रजोगुण में बँधे मनुष्यों के लिए तो कहना ही क्या है!

तमस्त्वज्ञानजं विद्धि मोहनं सर्वदेहिनाम्।
प्रमादालस्यनिद्राभिस्तन्निबध्नाति भारत।।८।।

तमः=तमोगुण को; **तु**=किन्तु; **अज्ञानजम्**=अज्ञान से उत्पन्न; **विद्धि**=जान; **मोहनम्**=मोहने वाले; **सर्वदेहिनाम्**=सब देहाभिमानियों को; **प्रमाद**=अनवधानता; **आलस्य**=उद्यमहीनता; **निद्राभिः**=चित्त के अवसाद के द्वारा; **तत्**=वह; **निबध्नाति**=बाँधता है; **भारत**=हे अर्जुन।

अनुवाद

हे अर्जुन! सब जीवों को मोहने वाले तमोगुण को अज्ञान से उत्पन्न जान। यह देहाभिमानी जीव को प्रमाद, आलस्य और निद्रा के द्वारा बाँधता है।।८।।

तात्पर्य

इस श्लोक में प्रयुक्त **तु** शब्द का तात्पर्य है कि देहाभिमानी जीव में तमोगुण विशेष रूप से पाया जाता है। यह तमोगुण सत्त्वगुण के ठीक विपरीत है। सत्त्वगुण में ज्ञान के विकास से तत्त्वबोध होता है, जबकि तमोगुण इसके बिल्कुल विपरीत कार्य